इक्कीसवीं सदी का किन्नर साहित्य और सामाजिक न्याय

पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी'के'खिल भाग' में लिंगानुशासन में प्राप्त होता है कि स्त्री-पुरुष एवं नपुंसक में क्या भेद है-स्तन केशवती स्त्री स्याल्लोमशः पुरुषः स्मृतः|

उभ्योरंतरं यच्च तदभावे नपुन्सकम||

अर्थात वक्ष और केशवाली को स्त्री रोएँ वाले को पुरुष कहा गया है तथा जिसमें इन दोनों का अभाव हो वह नपुंसक अर्थात किन्नर कहलाता है| इसी प्रकार किन्नरों की भक्ति को लेकर तुलसीदास ने रामचरितमानस में भी लिखा गया है-पुरुष नपुंसक नारि व जीव चराचर कोइ|

सर्व भाव भज कपट तजि मोहिं परम प्रिय सोइ||

इस चराचर जगत का कोई भी जीव चाहे वह स्त्री,पुरुष,नपुंसक ,देव,दानव-मानव कोई भी हो यदि वह सम्पूर्ण कपट को त्यागकर मुझे भजता है तो वह मुझे प्रिय है| 'हिजड़ा' शब्द की व्युत्पत्ति अरबी के'हिज्र'शब्द से हुई है, यह उर्दू भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है एक कबीले को छोड़ना| प्राचीन जैन और बौद्ध साहित्य में भी किन्नर अथवा नपुंसक का पृथक्करण किया गया है| रामचरितमानस में भी किन्नरों का उल्लेख मिलता है| वनवास जाते समय श्रीराम अपने पीछे आये छोटे भा इयों सहित सभी स्त्री एवं पुरुषों को मार्ग से वापस लौट जाने के लिए कहते हैं,आदेश का पालन करते हुए सभी स्त्री एवं पुरुष वापस अयोध्या लौट आते हैं,किन्तु किन्नर वापस नहीं लौटते| चौदह वर्ष बाद वनवास से वापस लौटते समय श्रीराम ने उनसे वहाँ रुके रहने का कारण पूछा,तब श्री राम के कथन को किन्नरों ने स्पष्ट किया कि प्रभु आपने नर और नारी को वापस जाने की अनुमतिदी थी,किन्तु हमारे संबंध में कोई आदेश नहीं किया था| इसका उल्लेख 'किन्नरकथा' उपन्यास के आरम्भ में महेन्द्र भीष्म ने भी किया है| स्त्री -पुरुष के साथ- साथ नपुंसक के उल्लेख से ही यह स्पष्ट है कि रामायण काल में किन्नर वर्ग की विशेष उपस्थिति रही है| महाभारत में एक किन्नर के रूप में शिखंडी तथा वृहन्नला(अर्जुन) का उल्लेख भी मिलता है| अर्जुन ने शिखंडी को ढाल बनाकर ही भीष्म पितामह का वध करने में सफलता हासिल की थी|

किन्नरों के बगैर हमारी भारतीय संस्कृति अधूरी सी है| किन्नर एक ऐसी जाति है,जि से देवताओं,यक्षों,गन्धर्वों के साथ स्थान प्राप्त रहा है|हमारी भारतीय संस्कृति के कुछ प्रमुख ठेकेदार ही हैं जो इस अमूल्य धरोहर की रक्षा न कर सके,तथा समय के साथ इन्हें न्याय भी नहीं दिला सके| शबनम मौसी, कमला जान,आशा देवी,कमला किन्नर और मधु किन्नर आदि ऐसे नाम हैं जिन्होंने चुनाओं में बहुमत से विजय प्राप्त करके विधायक और महापौर जैसे पदों को शोभायमान किया है| देश की पहली किन्नर प्राचार्य मानवी बंधोपाध्याय और पहली किन्नर वकील तमिलनाडु की सत्य श्री शर्मिला ने सिद्ध कर दिया कि किन्नर अथवा थर्ड जेंडर किसी भी विद्वान् स्त्री या पुरुष की भांति बुद्धिजीवी वर्ग की किसी भी ऊँचाई को हासिल कर सकते हैं| किन्नर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने आत्मकथा लिखी,'मैं हिजड़ा,मैं लक्ष्मी'| उज्जैन महाकुम्भ सिंहस्थ सन २०१६ में उन्हें महामंडलेश्वर की पदवी प्रदान की ग ई थी| अस्मिता की यह लड़ाई जो किन्नर समुदाय द्वारा आज लड़ी जा रही है,वह एक सर्वमान्य पहचान की स्थापना की लड़ाई है| १५ अप्रैल २०१४ को एक विजय प्राप्त हुई जब सर्वोच्च न्यायालय द्वारा तीसरे जेंडर को मान्यता देते हुए किन्नरों के पक्ष में एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया गया था|

थर्ड जेंडर के रूप में कानूनी स्वीकृति मिलने पर किन्नर अधिकारों की कार्यकर्ता लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने प्रसन्नता तो जाहिर की, लेकिन साथ ही इसे एक शुरुआत मात्र ही कहा था| थर्ड जेंडरलक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने कहा था हम कोर्ट के इस ऐतिहासिक फैसले से खुश तो हैं क्योंकि कोर्ट ने हमें महिला पुरुषों की तरह अधिकार दिए हैं लेकिन इस तीसरे लैंगिक समूह को समानता और बराबरी के लिए अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है| हिंदी साहित्य ने देर से ही सही लेकिन जोरदार पहल की | थर्ड जेंडर के जीवन तथा मनोदशा पर कहानियां ,कविताएं,उपन्यास और लेख लिखे जाने लगे | आज थर्ड जेंडर साहित्य के रूप में हमारे सामने है , किंतु इस विमर्श को खड़े होने में भी लगभग डेढ़ दशक से अधिक समय लग गया | सन 2002 में नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' आया जो थर्ड जेंडर के जीवन पर केंद्रित था | इस उपन्यास को अपने पहले दौर में उतना ध्यानाकर्षण नहीं मिला, जितना कि दूसरे दौर में, क्योंकि इक्कीसवीं सदी के पहले दशक के आरम्भ में थर्ड जेंडर के विमर्श बनने को लेकर हिन्दी साहित्य में संशय का वातावरण था| इसी बीच २००८ में मनोज रूप ड़ा का उपन्यास 'प्रति संसार '(२००८) में किन्नर विमर्श पर ही आता है|कथाकार महेन्द्र भीष्म ने किन्नरों के जीवन को बहुत गंभीरता से लिया और (२०११) में 'किन्नर कथा ' एवं'मैं पायल'(२०१६) शीर्षक से एक बेहतरीन रचना की सृष्टि कर डाली| इसी क्रम में निर्मला भुराड़िया का 'गुलाममंडी'(२०१४) तथा वरिष्ठ लेखिका और स्त्री विमर्श कार चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नंबर २०३ नालासोपारा '(२०१६) प्रकाशित हुआ| प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'तीसरी ताली '(२०११) सुभाष अखिल का उपन्यास 'दरमियाना'(२०१८) मोनिका देवी का 'अस्तित्त्व की तलाश में सिमरन'(२०१९) भगवंत अनमोल का 'जिंदगी 50-50'(२०१९) प्रकाशित होकर पाठकों के सामने आता है| इसी बीच किन्नरों के जीवन संदर्भों से जुड़ी हुई दो महत्त्वपूर्ण आत्मकथाएँ हमारे बीच आती हैं और अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज कराती हैं| २०१५ में लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की आत्मकथा हिन्दी में 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी ' नाम से प्रकाशित हुई है| २०१७ में मानोबी बंदोपाध्याय की आत्मकथा 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' प्रकाशित होती है|
लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने हिजड़ों तथा महिलाओं की समस्याओं को भी अंतररास्ट्रीय स्तर पर उठाया है| विश्व के तमाम देशों में उन्होंने थर्ड जेंडर समुदाय का प्रतिनिधित्व भी किया है| तमाम पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी थर्ड जेंडर समाज की शिक्षा और अधिकारों के लिए पूर्णतः समर्पित हैं| वे एक टी.वी कलाकार,कुशल नृत्यांगना तथा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी जानी-पहचानी जाती हैं| लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी टेलीविजन शो 'बिगबॉस सीजन-5' की प्रतिभागी भी रह चुकी हैं| टी.वी शो 'सच का सामना' 'दस का दम' और'राज पिछले जनम का 'में भी अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज करा चुकी हैं|अपने समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली आकर्षक व्यक्तित्व की धनी लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी को अपने हिजड़ा होने पर गर्व है | वे इसे अभिशाप नहीं मानती हैं | लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी पहले थर्ड जेंडर हैं जो संयुक्त राष्ट्र संघ में एशिया प्रांत क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं और टोरंटो में विश्व एड्स सम्मेलन जैसे अनेक मंचों पर अपने समुदाय और भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं | वे इस समुदाय के समर्थन और विकास के लिए 'अस्तित्व' नाम का संगठन भी चलाती हैं | लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने हिंदी भाषियों को चौंका दिया था ,देखा जाए तो हिंदी साहित्य में विमर्श के लिए उन्होंने एक विस्तृत आधार दे दिया था| किन्नर अपने जीवन काल में अनेक विसंगतियों का सामना करता है ,उनकी इन विसंगतियों को हिंदी साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करना प्रारंभ हो चुका है | 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में इनके जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया जा रहा है|
समाज की मानसिकता के कारण किन्नरों की छवि ऐसी बन चुकी है कि माता-पिता भी किन्नर रूप में पैदा हुई अपनी संतान को अपनाने से कतराते हैं ,इसलिए पहले पड़ाव पर ही इस तरह कीचुनौतियों का सामना करना पड़ता है| समाज में बिछड़ने वाले सामान्य मानव की मानसिकता तो ऐसी है ही समाज के उच्च वर्ग राजा महाराजा आज भी इसी मानसिकता से ग्रस्त हैं | एक मच्छर आदमी को हिजड़ा बना देता है अर्थात नपुंसक बना देता है यह डायलॉग बताता है कि मनुष्य को समाज में क्या उसे सेक्स पावर से ही पहचाना

जाना चाहिए, या फिर मात्र सेक्स पावर ही उसे पुरुषत्व प्रदान करती है क्या दया करुणा क्षमा प्रेम शक्ति जैसे गुण पुरुष को पुरुष होने का एहसास नहीं कराते |यमदीप उपन्यास के माध्यम से लेखिका नीरजा माधव यह बताती है कि इस उपन्यास में अपनी कच्छपी सीमा में भाषिक और दैहिक निजीपन नितांत अकेले महसूस करते और कभी-कभी सिर निकाल कर तालियां बजाते , जीवन को जी भर लेते उपेक्षित हिजड़ों का एक वर्ग है तो दूसरी ओर पितृसत्ता से सह अस्तित्व को बिना नकारे अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए पूर्णतः चैतन्य पूरा का पूरा स्त्री विमर्श है |देखने पर यह पता चलता है कि एक अव्यक्त छटपटाहट और वेदना से भर आई आंखें कि आखिर इनका क्या दोष है ? प्रकृति के क्रूर मजाक को ढोने और अभिशप्त जिंदगी जीने को ये लोग क्यों मजबूर हैं ?अपने परिवार से बिछड़ कर एक असामान्य जीवन जीते हुए इन लोगों को क्या अपने माता-पिता भाई-बहन याद नहीं आते होंगे परिवार वाले भी इनसे बिछड़ कर क्या सामान्य जीवन जी पाते होंगे, कैसी होती हैइनकी आंतरिक जिंदगी क्या बिल्कुल हमारी तरह? नीरजा माधव द्वारा थर्ड जेंडर पर लिखा गया पहला उपन्यास यदि अपने शीर्षक की प्रतीकात्मकता से थर्ड जेंडर को बखूबी जोड़ता है | यह स्थापित करता है कि यमदीप की भांति किन्नरों को भी अपनी स्थिति सुधारने का प्रयास करने की पहल हमें स्वयं ही करनी होगी | इस उपन्यास में नाजबीवी और सोना तथा मानवीय और आनंद की कथाएं समानांतर रूप से चलती हैं | बीच-बीच में एक दूसरे के निकट से वे गुजरती रहती हैं | मानवी गांव की स्थितियों से निकलकर शिक्षा ग्रहण करती है शहर में आकर नौकरी करती है पत्रकारिता के क्षेत्र में व्याप्त सड़ांध से टकराती है बार-बार अपने को बचाती है | जीवन का संघर्ष उसके भीतर पर्याप्त संवेदनशीलता का विकास करता है तभी तो वह वंचितों के प्रत्येक मुद्दे पर काम करने को लालायित रहती है, परिवार के स्तर पर भी सामान्य परंपरागत ईर्ष्यालु स्थितियों से भी वह जूझती है|
नाजबीवी उर्फ नंदरानी समाज की दृष्टि से किन्नर होने के कारण उपेक्षित है लेकिन उपन्यास में अपनी संपूर्ण मानवीय गरिमा और औदात्य के साथ उपस्थित है | जहां तथाकथित मनुष्यों की संवेदना नहीं पसीजती वहां नाजबीवी अपने साथियों के साथ पगली का प्रसव कराती है और पगली की जीवन समाप्ति पर स्वयं ही बच्ची को पालने का निर्णय लेती है| लेखिका ने इस उपन्यास में पगली की बेटी सोना के उद्धार का मार्ग प्रशस्त किया है इसके लिए उन्होंने मानवी और डी.एम आनंद कुमार को माध्यम बनाया है प्रारंभ से ही नाजबीवी मानवी के मध्य एक कोमल तंतु को विकसित होते दिखाया गया है मानवी पत्रकार है वह निर्भीक है तथा किन्नरों के प्रति संवेदनशील भी है,वह उनके जीवन से जुड़े मुद्दों को समझने का प्रयत्न करती है तभी तो प्राणों पर खेलकर सोना की रक्षा के लिए व्यवस्था से टकरा जाती है|ऐसी व्यवस्था जिसमें पुलिस और नेता दोनों की मिलीभगत थी और उसके अपने पत्रकार साथी भी उसे अकेला छोड़कर भाग गए थे| यह उपन्यास तृतीय लिंग के लोगों के विषय में सिर्फ चर्चा ही नहीं करता,बल्कि लेखिका द्वारा किया उनका चित्रण लेखिका के गहन अध्ययन का परिचय भी देता है | मानवीय गुण और शिव संकल्प दोनों मिलकर नाजबीवी को एक उपास्य और अनुकरणीय चरित्र के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं | माहताब गुरू के माध्यम से लेखिका ने किन्नर समुदाय के विषय में समाजमें व्याप्त बहुत से भ्रमों और अंधविश्वासों की सत्यता को उजागर किया है| उनके द्वारा जीवन के अनुभवों से अर्जित दार्शनिकता किसी शिक्षित और संवेदनशील व्यक्ति से कम नहीं है|
वे सामुदायिक एकता को जिस प्रकार जोड़े रख सके और नाज बीवीकोसोना के मामले में संरक्षण और सहयोग प्रदान किया वह बड़ा ही सराहनीय और प्रशंसनीय है| समय-समय पर समाज पर किए उनके तीखे व्यंग्य मर्मान्तिक हैं| इनके बीच ही परिवार,समाज,राजनीति,मीडिया सभी के दोहरे चरित्र उभरकर आते हैं| जहाँ एक तरफ यह उपन्यास प्रश्न रेखांकित करता है कि यदि मीडिया वास्तव में अपने वास्तविक चरित्र का निर्वाह करे तो समाज से विकारों को समाप्त करने में आसानी तो हो सकती है, वहीं दूसरी ओर बाज़ार या अर्थतंत्र के दबाव से मुक्त होकर काम करना भी इतना सरल नहीं है| इस उपन्यास के अंत में

स्त्री मानवी,पुरुष आनन्द और तृतीय लिंगी नाज बीवी के संयोग से एक सुंदर समाज का स्वप्न रचना अभिनंदनीय है|

हिन्दी कथा साहित्य में विधा की दृष्टि से उपन्यास का क्षेत्र बड़ा ही व्यापक और विस्तृत है, जिसमें मानव जीवन से संबद्ध तमाम कोनों- अंतरों में झाँकने की कोशिश तो हुई है,किन्तु आलेख के संदर्भ में अध्ययन की दृष्टि से देखा जाए तो यह विषय इतना उपेक्षित है कि अँगुलियों पर गिने जाने योग्य रचनाएँ आज उपलब्ध होती हैं| इस संदर्भ में हम किन्नर कथा को भी देख सकते हैं जो एक सामाजिक कार्यकर्ता तथा न्याय व्यवस्था से संबद्ध लेखक महेन्द्र भीष्म द्वारा रचा गया है| महेन्द्र भीष्म जी ने अपने इस उपन्यास में बुन्देला इतिहास की एक समृद्ध रियासत को ही कथाभूमि बनाया है और कथान क को सत्य घटना पर आधारित बताया है,साथ ही कथा की ऐतिहासिकता और प्रामाणिकता के लिए कुछ महत्त्पूर्ण तिथियों का भी निर्देश दिया है| यह उपन्यास दो उच्च कुलों में उत्पन्न तारा और सोना की कथा कहता है,जिसमें लेखक ने बीच-बीच में थर्ड जेंडर पर सैद्धांतिक विवेचन को भी मिलाने की कोशिश की है,जो कथा में संवेदना जगाने के स्थान पर कथा को बोझिल भी करता है| लेखक यह सिद्ध करने में सफल भी हुआ है कि थर्ड जेंडर बच्चा या बच्ची अपनी कुलीन पृष्ठभूमि के बावजूद अपने ही घर में उपेक्षा का दंश झेलता है| यही कारण है कि देर से ही सही सोना की अपूर्णता का ज्ञान जगत सिंह पर गाज बनकर गिरता है| अपनी तथाकथित प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए वे दीवान को उसकी हत्या का आदेश देते हैं| घटनाक्रम सोना को सज्जन और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण किन्नर गुरू तारा तक पहुंचा देता हैं,जहाँ एक पूर्ण स्त्री मातिन द्वारा सोना उर्फ़ चंदा का पालन-पोषण होता है| तारा गुरू अपने परिवार के सम्पर्क में बनी हुई है| अपने अतीत और वर्तमान के अंतर को गहराई से जीती तारा गुरू केवल साधारण किन्नर बनकर ही नहीं रह जाती, बल्कि लेखक ने यह दिखाया है कि औरों से अलग तारा गुरु के डेरे के किन्नर सत्यमार्ग पर चलकर भी अच्छा जीवन व्यतीत करते हैं|

सोना उर्फ़ चंदा राई नृत्य में दक्ष है,जब तक तारा गुरू जीवित रहती है,कभी जैतपुर का रुख नहीं करती,उसकीमृत्यु के बाद तारा गुरू की प्रतिज्ञा से अनजान सोनिया जैतपुर का आमन्त्रण स्वीकार कर लेती है| इसी संयोगात्मक स्थिति का समावेश लेखक महेन्द्र भीष्म ने समाधान देने के लिए किया है| गढ़ीमें पहुंचकर बचपन की स्मृतियों का साक्षात्कार चंदा को उद्विग्न कर देता है| नृत्य के दौरान वह इसलिए अस्वस्थ होकर गिर पड़ती हैं| एक नाटकीय घटनाक्रम से पूरा परिवार फिर एक साथ हो जाता है| सुखांत की तर्ज पर लेखक ने जगतसिंह का हृदय-परिवर्तन दिखाया है| कुंवर द्वारा स्थिति को समझे बगैर गोली चलाने के बाद भी चंदा उर्फ़सोना को लम्बे ऑपरेशन के बाद जीवनदान मिलता है| शोभना द्वारा परिवार में सोना की स्थिति के बारे में हुई चर्चा के बाद चिकित्सीय परीक्षण और सामान्य ऑपरेशन के बाद सोना के सुखद भविष्य की तस्वीर दिखाई गयी है| तारा गुरु का भतीजा मनीष चंदा की वास्तविकता जानकरभी उससे प्रेम करता है,उसके साथ शादी करके एक सुखमय जीवन की कल्पना करता है| यह स्थिति सकारात्मक है,क्योंकि हमारे यहाँ तो शेष सभी आंगिक विकारयुक्त लोगों कोसामान्यतः घर-बार का सुख मिल जाता है,पर थर्ड जेंडर के लोगों को इससे वंचित ही रहना पड़ता है| इस उपन्यास में लेखक ने एक तरफ इंगित किया है कि उपन्यास के रचनाकाल में हमारे देश में इस तरह की सामाजिक जागृति का नितान्त अभाव था,लेकिन विदेशों में इस तरह की सुविधाएँ उपलब्ध थीं| इसके अतिरिक्त शिक्षा ही एकमात्र ऐसा माध्यम है,जो मनुष्य को मानसिक जकडबंदी से मुक्त कर मानसिक विकास की ओर ले जा सकता है| पारम्परिक मान्यताओं और किन्नर के प्रति पूर्वाग्रहों को चिकित्साशास्त्र के आलोक में परखकर इस उपेक्षित वर्ग को भी सामान्य जीवन दिया जा सकता है|

इसी तरह से 'मैं पायल' उपन्यास के रूप में महेन्द्र भीष्म ने पाठकों के सामने थर्ड जेंडर पर दूसरी रचना प्रस्तुत की है,यह एक वास्तविक चरित्र पायल सिंह के जीवन संघर्ष को आधार बनाकर लिखा गया है| अतः यह जीवनीपरक उपन्यास की श्रेणी में भी आता है| इसमें यथार्थ का खुरदुरा धरातल है,यह रचना पायल के

जीवटता की कहानी कहते हुए समाज के मानवीय और अमानवीय और मानवीय दोनों पक्षों को सामने रखती है| पायल उर्फ़ जुगनी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि अपने ही परिवार में उपेक्षा का दंश झेलना इतना यंत्रणापूर्ण हो जाता है कि बच्चा घर छोड़ने के लिए विवश हो जाता है,बाहर के संसार की निर्ममता के बीच भी स्नेह और कोमलता का एहसास उसे मरने नहीं देता| वह रेलवे स्टेशनों पर प्रौढ़ों के द्वारा यौन शोषण का शिकार होती है| अपनी बुद्धिमत्ता से वेशभूषा बदलकर वह तात्कालिक तौर पर अपनी रक्षा कर लेती है| पायल के भीतर लगातार आगे बढ़ने की भावना बलवती होती है,इसलिए वह गेट कीपर से प्रोजेक्टर रूम ऑपरेटर बन जाती है| फिल्मों का सर्व व्यापी प्रभाव भी उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता रहता है| वह अपनी मिमिक्री करने की योग्यता, अपनी गायन योग्य आवाज़ के बल पर लखनऊ में अपना कैरियर बनाना चाहती है लेकिन किन्नरों द्वारा वह पकड ली जाती है| एक दुखद घटनाक्रम पायल के तन-मन दोनों को आहत करता है,वह वापस कानपुर लौटकर स्वयं को शरीर के स्तर पर भी बलिष्ठ बनाती है| अगला घटनाक्रम उसे लखनऊ आकाशवाणी में काम दिला देता है| वह अपनी योग्यता के बल पर प्रसिद्धि और धन दोनों की ही अधिकारिणी बन गयी थी| अशोक के रूप में प्रेम भी पायल को मिला,पर उसी अशोक ने अपने को जीवन से निष्कासित कर देने की प्रतिहिंसा में पायल को पायल गुरु बनने के लिए प्रेरित किया| पायल ने आगे बढ़ने के क्रम में इन्टरनेट और यूट्यूब का उपयोग करना सीखा|
यहाँ पायल के जीवन में आये तमाम उतार-चढाव समाज के गलीज और सुंदर दोनों पक्षों को उद्‌घाटित किया जा सकता है,किन्नर की नियति नहीं बदलती या सामाजिक यथास्थितिवाद उसे कभी बदलने ही नहीं देता| इस उपन्यास में यह भी स्पष्ट होता है कि यदि सभी किन्नर व्यक्तिगत रूप से अपनी स्थिति में सुधार लाना चाहें और अपना मानसिक और वैयक्तिक विकास करते हुए अन्य क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाओं की तलाश करें तो उन्हें हमेशा सकारात्मक परिणाम ही मिलेंगे|
स्त्री विमर्श की बहुचर्चित लेखिका के रूप में एक चिर-परिचित नाम हमारे सामने चित्रा मुद्गल जी का भी आता है| उनका एक नवीनतम उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नंबर २०३ नालासोपारा ' किन्नर विमर्श को आधार बनाकर बड़ी ही संवेदनशीलता से लिखा गया है| इस उपन्यास की संवेदना के चरम को आत्मसात करने के लिए आवश्यकता है कि इसे अंत तक पढ़ा जाए, जिसमें एक किन्नर की लाश बरामद होने की बात और उसकी हत्या में अंडरवर्ड की भूमिका की बात भी कही गयी है| अनुमान से तो यह स्पष्ट हो जाता है कि लाश बिन्नी उर्फ़ विनोद की ही है| बिन्नी चौदह वर्ष तक अपने परिवार में रहकर संस्कारित और शिक्षित होता है| वह पढने में भी कुशाग्र बुद्धि है और भविष्य में एक गणितज्ञ बनने की कल्पना भी करता है| प्रारम्भ में तो मंजुल को दिखाकर चम्पाबाई को टरकादिया जाता है किन्तु बाद में ऐसा न हो सका और उसे एक नितान्त ही अपरिचित संसार का अंश बनने को विवश होना पड़ा| यह त्रासदी बहुआयामी है| माँ-बाप सामाजिक श्रम से बचने के लिए सबकुछ बेचकर घर बदल देते हैं| संबंधियों और स्कूल, दोनों स्थानों पर अलग-अलग झूठी कहानी सुनाकर बिन्नी की मृत्यु प्रचारित करा दी जाती है| सिद्धार्थ भविष्य में भी अनजान भय से मुक्त नहीं हो पाता है और अपनी संतान के जन्म के समय भी डरा हुआ रहता है| मंजुल का बचपन माँ की गहन मानसिक पीड़ा की छाया में ढँक जाता है,अपनी मृत्यु से पूर्व जब वन्दना बेन समाज की रूढ़ मान्यताओं से विद्रोह कर अपने मन की करना चाहती हैं,तब तक तो बहुत देर हो चुकी होती है| जब बिन्नी उर्फ़ विनोद उर्फ़ बिमली की माँ बंदना बेन का माफ़ीनामा सार्वजनिक रूप से प्रकाशितहोता है,यानी जब जीवन अपनी समग्रता में बाहें पसारकर विनोद की तरफ आता है,निर्मम राजनीति उसे लील लेती है|
लेखिका चित्रा मुद्गल ने 'नालासोपारा' उपन्यास के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति, स्थितितथा व्यवस्था को कटघरे में खड़ा किया है| दूसरों के कंधों पर बंदूक रखना सबसे आसान काम है,शुरुआत घ र से ही होनी चाहिए| जब परिवार ही इस जननांग दोषी बच्चों को डंके की चोट पर स्वीकारेगा,तो फिर समाज भला उसे कैसे प्रताड़ित करेगा? संविधान इन्हें शिक्षा का अधिकार देगा तो शिक्ष ण संस्थाएँ भला कैसे मना करेंगी?लेखिका चित्रा मुद्गल जी ने स्वयं किन्नरों को भी उनकी अपनी स्थिति के लिए दोषी ठहराया है,क्योंकि अपने जीवन में

जिस विस्थापन,उपेक्षा,अपमान को वे स्वयं झेलते हैं| आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी वैसी ही पृष्ठभूमि तैयार कर देते हैं,क्योंकि उनका उद्देश्य भी अपनी शक्ति बढ़ाना होता है| इन्हें यह निर्णय परिवार के विवेक पर छोड़ देना चाहिए कि बच्चा परिवार का अंश रहेगा या किन्नरों के डेरे का| तब निश्चित ही परिवार,समाज के अनावश्यक भय से मुक्त होकर अपनी संतान को स्वयं ही पालेगा| यदि यह वर्ग स्वयं शिक्षा की ओर कदम बढ़ाये तो इनके अड्डे यौनाचार और रोग के प्रतीक न बनकर अपनी विकलांगता पर विजय का प्रतीक बन जाएँ| समाज की एक सार्थक इकाई के रूप में तब यह वर्ग स्वयं को स्थापित कर सकेगा| परंपरित पत्र-विधान शैली के बीच-बीच में स्मृतियों के गलियारे में आवाजाही करते हुए बिन्नी अपने जीवन को उसकी संपूर्ण त्रासदी को बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त करता है| चित्रा जी यह कहना चाहती हैं कि रूढ़,परंपरित,मानसिक पूर्वाग्रहों को केवल बातों के सहारे परिवर्तित नहीं किया जा सकता,बल्कि एक या दो पीढ़ियों को अपना सर्वस्व बलिदान कर नवीन विचार को समाज की मानसिकता में प्रत्यारोपित करना पड़ेगा,तभी यह साज बदलेगा| 'नालासोपारा' उपन्यास की एक विशिष्ट बात यह है कि किन्नर जैसे विषय पर आधारित होने के बाद भी इस उपन्यास में अपशब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया गया है| इस उपन्यास की भाषा शैली,शब्द विन्यास इतने जीवंत हैं कि वे पाठकों को ऐसे चिपका लेते हैं,जैसे कि कोई माँ अपने बच्चे को तन से चिपका लेती है| निःसंदेह यह चित्रा मुद्गल जी की भाषा, उनकेकथ्य एवं संवेदनात्मक शक्ति का ही चमत्कार है कि वे उपन्यास जैसी दीर्घ विधा में भी एक ऐसा जादू पैदा करती हैं, जो पाठक को अपने मोहपाश में बाँध लेता है| इस तरह के विषय को चित्रा जी बिना गालियों के, बिना अभद्र शब्दावली भाषा तथा स्थितियों को इस तरह से बेहतर ढंग से निकाल ले जाती हैं कि पाठक जब पढता है तो उसे कहीं पर भी यह महसूस नहीं होता है कि यह भाषा जो विनोद बोल रहा है, वह किन्नर की भाषा नहीं है,क्योंकि सामान्य बोलचाल में भी ये लोग गाली का प्रयोग करते हैं तो चित्रा जी उस संवाद को उस स्थिति को यथार्थ बनाती हैं,लेकिन बगैर गाली के| यहचित्रा मुद्गल जी की लेखन शैली का ही कमाल है, और निश्चित रूप से आज के विमर्श के दौर में यथार्थ के नाम पर जो भी लिखा जा रहा है,उसमें भाषा का जो स्खलन हुआ है,उसके सामने एक बड़ा विकल्प और एक बड़ी चुनौती तथा एक व्यापक मानदंड भी चित्रा मुद्गल जी प्रस्तुत करती हैं|

एक बच्चे के लिए एक माँ की कीमत क्या होती है तथा उसकी भूमिका उस बच्चे के जीवन में कितनी महत्त्वपूर्ण होती है,यहाँ ये सब विनोद और उसकी बा के संवादों से पता चलता है|विनोद के जीवन में अनेक पड़ाव आते है,परन्तु हर पड़ाव पर वह अपने परिवार एवं माँ के साथ ही रहता है| अपने आपको विनो द कहीं भी उनसे जुदा नहीं करता है, उसके परिवार ने भले ही उसे अलग कर दिया है| उसकी बा ने उसे दिखावे में चाहे अलग कर दिया है लेकिन फिर भी उनका जुड़ाव एक-दूसरे के प्रति कायम है| चित्रा मुद्गल जी महज एक वरिष्ठ साहित्यकार ही नहीं बल्कि साहित्य,समाज तथा मनुष्य और उसकी संवेदना को जीने वाली कथाकार भी हैं,जो उचित दायित्त्व के साथ-साथ एक मनुष्योचित दायित्त्व को निभाने वाले साहित्य के मर्म और दर्द को समझते हुए पाठकों को भी यही समझाना चाहती हैं|

किन्नर अपने जीवन काल में अनेकों विसंगतियों का सामना करता है| उनकी इन विसंगतियों को हिन्दी साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करना प्रारम्भ हो चुका है| २१वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में इनके जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया जा रहा है| समाज की रूढ़ मानसिकता के कारण किन्नरों की छवि ऐसी बन चुकी है कि माता-पि ता भी किन्नर रूप में पैदा हुई अपनी ही संतान को अपनाने से कतराते हैं| इसलिए जीवन के पहले पडाव पर ही किन्नरों को इन जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ता है| किन्नर को जीवन के आरम्भ से लेकर जीवन के अंत तक अनेक संकटों से जूझना पड़ता है| उसकी दूसरी सबसे बड़ी चुनौती उसकी देह होती है| दैहिक बनावट और अंतःकरण की भावनाओं से सामंजस्य न होने के कारण वे मानसिक वेदना तो सहते ही हैं, साथ ही कई बार उनकी देह शोषण का

शिकार भी हो जाती है| लोगों के घरों में मंगल अवसरों पर अपनी वेदना को छिपाकर हर्षित होने वाले किन्नरों की देह लोगों में प्रायः आकर्षण का केंद्र बनी रहती है| इसीलिए कुछ कुंठित मानसिकता के लोग उनका दैहिक शोषण करते हैं| किन्नर समाज की यह एक यथार्थ स्थिति है,जिसे हिन्दी उपन्यासों में मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है| शारीरिक विकृतियों की विडंबनाओं के अतिरिक्त एक अन्य चुनौती भी किन्नर समुदाय के सामने खडी रहती है,और वह है आर्थिक विपन्नता| किन्नर समुदाय लोगों के मंगल पर्वों और उत्सवों पर नाच-गाकर, तालियाँ पीटकर अपना जीविकोपार्जन करते हैं| भारत विशेष के संदर्भ में सरकारी नीतियों में उनके विकास के कोई विशेष प्रबंध नहीं किए गये हैं| सरकारी नौकरी प्राप्त करने का कोई प्रावधान नहींहै| इसलिए प्रायः वह असहाय अवस्था में मजबूरीवश सड़कों पर रेलगाड़ियों में तालियाँ पीटकर माँगते हुए नज़र आते हैं| आर्थिक विकास के अवसरों के अभाव में वे इस तरह का जीवन जीने के लिए मजबूर और लाचार हैं| अतः स्पष्ट है कि किन्नर वर्ग अपने पेट को पालने के लिए लोगों के आगे हाथ फैलाने के लिए ही विवश हैं,क्योंकि हमारी शासन व्यवस्था की इस विषय में कोई विशेष रूचि नहीं है| किन्नरों की आर्थिक विपन्नता का एक अन्य कारण अशिक्षा भी है| शिक्षा के अभाव के कारण वे कोई नौकरी भी नहीं कर सकते और उनको शिक्षा के अवसर भी इसलिए नहीं प्राप्त होते क्योंकि अभी समाज और प्रशासन दोनों ही इस समस्या से अनभि ज्ञ हैं| स्कूल या कॉलेज में दाखिले के लिए लिंग वाले फॉर्म में स्त्री और पुरुष के विकल्प में से कोई भी एक विकल्प चुनने का अधिकार किन्नरों को नहीं दिया गया है| इसलिए भारत की प्रशास न व्यवस्था के आधार पर काफी लंबे समय से केवल स्त्री लिंग या फिर पुरुष लिंग वाला व्यक्ति ही शिक्षा ग्रहण कर सकता था,किन्तु अब इसमें किंचित सु धार करते हुए एक अन्य नाम से भी कालम बनाने का प्रावधान किया गया है| अतः यहाँ स्पष्ट है कि किन्नर समुदाय के विकास के लिए सरकार को निश्चित रूप से विशेष योजनाएँ बनानी चाहिए,तभी यह समुदाय सामान्य समाज में सामान्य मानव की भांति विचरण कर सकेगा| किन्नरों के विकास के लिए समाज और शासन दोनों को ही अपना योगदान देने की आवश्यकता है| किन्नर भी सामान्य मानव की ही तरह होते हैं,उनके विकास के लिए सर्वप्रथम समाज को अपनी ही मानसिकता में कुछ परिवर्तन लाना होगा| शासन की सक्रिय भूमिका के साथ किन्नरों का विकास हो सकता है| इससे भी आवश्यक है किन्नर समुदाय में चेतना का संचरण| यदि वे स्वयं चेतन हो जायेंगे तो बहुत सी समस्याओं का हल वे खुद भी ढूँढ सकते हैं| इसीलिए हमारा हिन्दी साहित्य इन वर्ग विशेष की चुनौतियों को अपने ढंग से चित्रांकित करने का प्रयास कर रहा है| किन्नर विमर्श हिन्दी साहित्य में अभी एक अलग अवस्था में है| लोगों की मानसिकता अभी भी इन्हें स्वीकारने में हिचकिचा रही है,फिर भी हमारे कुछ साहित्यकार किन्नर विमर्श को लेकर सजग हुए हैं और इस विमर्श को आगे बढ़ाने में निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं,जिसमें नीरजा माधव,मनोज रूपड़ा, महेन्द्र भीष्म,प्रदीप सौरभ,चित्रा मुद्गल,मोनिका देवी,सुभाष अखिल,भगवंत अनमोल,निर्मला भुराड़िया आदि नाम उल्लेखनीय हैं| इन सभी उपन्यासकारों के उपन्यासों के माध्यम से किन्नरों को मुख्यधारा से जोड़ने का अथक प्रयास किया गया है| इनके सारे उपन्यास किन्नर जीवन के परिदृश्यों को बखूबी सामने रखते हैं| किन्नर सामाज पर आधारित तमाम प्रतिनिधि उपन्यास स्पष्ट करते हैं कि किन्नर समाज किस तरह समाज का महत्त्वपूर्ण अंग हैं| उन्हें भी समाज में उनका हक व सम्मानजनक स्थान मिलना चाहिए,जो एक पुरुष अथवा स्त्री को मिलता है| किन्नर समुदाय के बारे में पौराणिक आख्यानों, रामायण,महाभारत,अर्थशास्त्र,कामसूत्र एवं उसके बाद मुगल इतिहास में भी बहुत सी घटनाएँ मौजूद हैं|

अमेरिकी कवि शेरेन रफेल ने २०१७ में एक कविता लिखी थी, जिसमें उन्होंने अपनी उस व्याकुलता को व्यक्त किया था,जिसमे वे एक थर्ड जेंडर मनुष्य होने के परिप्रेक्ष्य में अपना व्यक्तित्त्व पहचानना और जानना चाहते हैं| इसी तरह से सन २०११ में कवि मोसेस समांदार ने 'द थर्ड जेंडर' शीर्षक कविता में इस बात का उलाहना दिया था कि जिसने स्त्री और पुरुष को बनाया, उसी ने तृतीय लिंगियों को भी बनाया,तो फिर यह

भेदभाव और किन्नरों को एक विचित्र प्राणी भला क्यों समझा जाता है? किन्नर जीवन की स्थिति को व्यक्त करती गीतिका वेदिका जी की एक कविता बड़ी ही महत्त्वपूर्ण जान पड़ती है-

"अधूरी देह क्यों मुझको बनाया|
बता ईश्वर तुझे ये क्या सुहाया||
किसी का प्यार हूँ न वास्ता हूँ
न तो मंजिल हूँ न मैं रास्ता हूँ|
कि अनुभव पूर्णता का हो न पाया
अजब यह खेल रह-रह धूप छाया||
अधूरी देह क्यों.......
नहीं नारी हूँ मैं और नर नहीं हूँ
विवश हूँ मूक हूँ पत्थर नहीं हूँ|
जिसे मौका मिलने उसने सताया
सभी ने रक्त के आँसू रुलाया||
अधूरी देह क्यों.......
बहिष्कृत और तिरस्कृत त्रासदी हूँ
भरी जो पीर से जीवन नदी हूँ|
मिलन सागर को ही कब रास आया
वही एकाकीपनमुझमें समाया||
अधूरी देह क्यों.......
बता ईश्वर तुझे ये क्या सुहाया||"

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि जब इस वर्ग,समाज या जाति के लोग मात्र आरक्षण पाने के लिए करोंड़ों की संपत्ति फूंक देते हैं ,विरोध की आड़ लेकर समाज में कदाचार फैलाते हैं,मंदिर-मस्जिद का सहारा लेकर साम्प्रदायिक द्वेष व दंगे भड़काते हैं,कम वेतन व भत्ते की आड़ लेकर किसी न किसी बहाने सरकार को झुकाने की कोशिश करते हैं,आज उसी समाज में हमने क्या किसी किन्नर को सरकारी बसों में आग लगाते देखा,रेलगाड़ी को बीच पटरी पर असमयरोकते देखा है या कहीं कभी तोड़फोड़ करते देखा है| किन्नर लोग इस समाज को कोई नुक्सान नहीं पहुंचाते, वे तो अपनी ही बदहाली पर आज खून के आँसू रोने को विवश हैं| आज उन्हें सँभालने वाला कोई भी नहीं है,आज कोई संगठन या संस्था नहीं है जो किन्नरों की आवाज बनकर सामने आये, उनके लिए आरक्षण की माँग करे या उनके लिए भी सरकारी पदों पर नियुक्तियों की सिफारिश करे| किन्नर समाज आज भी शिक्षा व राजनीतिक अधिकारों से वंचित है| इसके बावजूद सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाएँ या मानव अधिकार आयोग किन्नरों की उपेक्षा कर रहा है,ऐसी स्थिति में किन्नर आखिर करें भी तो क्या करें?

आज आवश्यकता है कि कोई संगठन इनकी आवाज बनकर सामने आये तथा हमारी भारतीय संस्कृति में सदियों से महत्त्वपूर्ण रहे किन्नर समुदाय की रक्षा करे,हालाँकि किन्नर समाज खुद को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए संघर्षरत है| हमारे समाज की ही रूढ़ मानसिकता के कारण आज किन्नरों की छवि ऐसी बन चुकी है कि माता-पिता भी किन्नर रूप में पैदा हुई अपनी संतानको स्वीकार करने से कतराते हैं| आज हमें अपने साथ किन्नरों को भी समाज की मुख्यधारा से जोड़ना होगा,उन्हें उनका पूरा हक दिलाते हुए उनका मान-सम्मान करना होगा,उन्हें रोजगार प्रदान करवाना होगा| वे भी तो आखिर बस इतना ही चाहते हैं कि उन्हें किन्नर नहीं बल्कि एक इंसान समझा जाय| किन्नरों को पिछड़े वर्ग में शामिल करने के साथ आरक्षण का जो लाभ उच्चतम न्यायालय के निर्णय से मिलने जा रहा है,उनमें सबसे अच्छी बात तो यह होगी

कि इस समाज को नकली किन्नरों से निजात मिल जाएगी| साथ ही जो असली किन्नर हैं जिन्हें हमेशा से सिर्फ प्रकृति का दर्द ही मिला है,जो अपने परिवार से अलग विस्थापन की पीड़ा को अपने हृदय में सहते चले आ रहे हैं,और इस समाज में दर-दर भटकते रहते हैं,उनके साथ सच्चे अर्थों में उन्हें सामाजिक न्याय मिल सकेगा| आर्थिक तंगी और परिवार के साथ भावनात्मक स्तर पर लगाव या जुड़ाव न हो पाने के कारण भी किन्नर यौन दुष्कर्म की ओर कदम बढ़ा देते हैं,इस कारण भी इन्हें सामाजिक सम्मान और यथोचित न्याय नहीं मिल पाताहै| किन्नरों को जाँचने-परखने के लिए हमें अपने तमाम पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर अश्लीलता रुपी चश्में को भी उतार फेंकना होगा|

आजसामाजिक न्याय हर व्यक्ति चाहे वह किन्नर,स्त्री,दलित या आदिवासी ही क्यों न हो सभी के लिए अनिवार्य हो गया है|जिस समाज में न्याय नहीं होगा वह समाज ,समाज न रहकर एक अराजक तत्त्वों का झुण्ड मात्र बनकर रह जायेगा| वैश्विक परिदृश्य में भी यदि हम देखें तो तृतीय लिंगी समुदाय ने अपने सामाजिक न्याय और मानवीय अधिकारों को हासिल करने की लम्बी लड़ाई लड़ी है|

अमेरिका,इंग्लैण्ड,जर्मनी,कनाडा,ऑस्ट्रेलिया,नीदरलैंड,अर्जेंटीना,नेपाल आदि देशों में तृतीय लिंग के रूप में किन्नर को पहचान मिल चुकी है| भारत में इस संदर्भ में अभी भी काफी अभाव है| इस प्रकार यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि किन्नरों में चेतना सरकारी नीतियों में सुधार,समाज की मानसिकता में परिवर्तन तथा शिक्षा और व्यवसाय के समान अवसर मिलने से किन्नर समुदाय भी समाज का कोई अलग समुदाय बनकर नहीं रह जायेगा,अपितु वह भी समस्त समाज का हिस्सा होकर पूरे समाज के विकास में अपना योगदान देगा| हिंदी साहित्य के माध्यम से आज किन्नर समाज की विभिन्न चुनौतियों को उजागर किया जा रहा है|

संदर्भ ग्रन्थ:-

१-यमदीप-नीरजा माधव-२००२ सुनील साहित्य सदन नई दिल्ली
२-प्रति संसार-मनोज रूपड़ा-२००८ ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली
३-तीसरी ताली-प्रदीप सौरभ-२०११ वाणी प्रकाशन दिल्ली
४-गुलाममंडी-निर्मला भुराड़िया-२०१४ सामयिक प्रकाशन दिल्ली
५-किन्नर कथा-महेन्द्र भीष्म-२०१४ सामयिक प्रकाशन दिल्ली
६-मैं पायल-महेन्द्र भीष्म-२०१६ अमन प्रकाशन कानपुर
७-पोस्ट बॉक्स नं.२०३ नालासोपारा-चित्रा मुद्गल-२०१६ सामयिक प्रकाशन दिल्ली
८-मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी-लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी-२०१५ वाणी प्रकाशन दिल्ली
९-पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन-मानोबी बंद्योपाध्याय-२०१७ राजपाल एंड संस दिल्ली
१०-रामचरितमानस-तुलसीदास गीताप्रेस गोरखपुर मझला साईज
११-अष्टाध्यायी-लिंगानुशासन-पाणिनि-खिल भाग

डॉ.महात्मा पाण्डेय

सहायकआचार्य एवं शोध निर्देशक

हिन्दी विभाग,साठेयमहाविद्यालय

विले पार्ले (पूर्व),मुंबई-४०००५७

मो.नंबर-८४५४०२८१८५

ईमेल-mahatmapandey1982@gmail.com